REVIEW OF RESEARCH

महिला शिक्षिकाओं के भावनात्मक हिंसा का उनके सामाजिक स्वतंत्रता पर प्रभाव का अध्ययन

दीपिका चटर्जी[1] , डॉ स्मृति किरण सायमन्स[2]

[1] पी.एच.डी. शोधार्थी (शिक्षा) डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा बिलासपुर (छ.ग.)
[2]एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा) डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

सारांश

भारतीय समाज में नारी को सृष्टि का प्रमुख आधार माना गया है। परन्तु उसकी स्थिति सदैव एक समान नहीं है। विभिन्न कालों में भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा भिन्न–भिन्न रही है वैदिक काल में नारियों को भारतीय समाज में सम्मान जनक स्थान प्राप्त था, उन्हें कई क्षेत्रों में पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त थे तथा वे राजनीति में भी भाग ले सकती थी उस समय पर्दा प्रथा नहीं थी। प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ राज्य के कोरिया जिले में अध्यापन कर रही शिक्षिकाओं (ग्रामीण +शहरी) को शामिल किया गया है जिनकी संख्या 640 है।

समस्या के अध्ययन के लिए उपकरण की आवश्यकता होती है। प्रदत्तों के संकलन में उपकरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। प्रस्तुत शोध में अध्ययन हेतु प्रमाणीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है– Emotional Violence Scale (Against Women) S.K Bawa and S. Kaur, Women social Freedom scale (L.I. Bhushan) । आँकड़ों के साँख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात यह पाया गया कि महिला शिक्षिकाओं के भावनात्मक हिंसा का उनके सामाजिक स्वतंत्रता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शब्द कुन्ज–प्रमाणीकृत, भावनात्मक हिंसा, सामाजिक स्वतंत्रता इत्यादि।

प्रस्तावना–

नारी सामाजिक जीवन की धुरी है, जहाँ से जीवन का संचालन होता है। नारी जो बालक को जन्म देती है, परंतु उसका श्रेय पुरूष को देने वाली नारी के जीवन में केवल आँसू, निराशा, वेदना, दुःख–दर्द अत्याचार तिरस्कार आदि का सिलसिला है। भारतीय समाज में नारी को सृष्टि का प्रमुख आधार माना गया है, परन्तु उसकी स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। विभिन्न कालों में भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा भिन्न–भिन्न रही है। एक नारी का स्थान केवल रसोई घर तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। यदि एक नारी को सही अवसर मिले तो वह प्रत्येक वो कार्य कर सकती है जो एक पुरूष कर सकता है। प्रस्तुत शोध में महिला शिक्षिकाओं के मध्य पाई जाने वाली सामाजिक स्वतन्त्रता का अध्ययन किया गया है एवं महिलाओं के जीवन में भावनात्मक हिंसा किस प्रकार प्रभावित करती है इसकी विवेचना की गई है।

अध्ययन का औचित्य–

महिलाएँ हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा है, इसीलिए राष्ट्र निर्माण के कार्य को समझा जा सकता है। समूची सभ्यता में व्यापक बदलाव के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में महिला सशक्तिकरण आदालन बीसवी शताब्दी के आखिरी दशक का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक तथा सामाजिक विकास एक जटिल प्रक्रिया है, जो सुव्यवस्थित रूप से तैयार की गई विकास नीतियों को रूप में राजनीतिक इच्छा को रेखांकित करती है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूरी–पूरी क्षमता का उपयोग करके अपनी कार्य क्षमता में वृद्धि कर सके। जनता की खुशहाली तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार

करके मानव विकास का मूलभूत लक्ष्य हमारी राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया का अत्यन्त आवश्यक अंग है।

समस्या कथन–

महिला शिक्षिकाओं के भावनात्मक हिन्सा का उनके सामाजिक स्वतन्त्रता पर प्रभाव का अध्ययन।

प्रयुक्त पदों की क्रियात्मक परिभाषा–

(1) भावनात्मक हिंसा–

महिला संरक्षण अधिनियम 2005 की धारा 2 (छ) एवं 3 के अनुसार ''महिला की गरिमा का उल्लघन अपमान या तिरस्कार करना या अतिक्रमण करना या मौखिक और भावनात्मक दुर्व्यहार अर्थात अपमान, उपहास, गाली देना या आर्थिक दुर्व्यवहार अर्थात आर्थिक या वित्तीय संसाधनो जिसकी वह हकदार है, से वंचित करना ये सभी भावनात्मक हिन्सा कहलाते हैं।''

(2) नारी सामाजिक स्वतंत्रता–

महिला संरक्षण अधिनियम 2005 की धारा 19 के नियम 9 के अनुसार–

''नारी की सामाजिक स्वतन्त्रता सशक्तिकरण की एक अवस्था है, जो कुछ विशेष आंतरिक कुशलताओं शैक्षिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों पर आधारित होती है जिसके लिए समाज में आवश्यक कानूनों सुरक्षात्मक प्रावधानों और उनमें भली–भाँति क्रियान्वयन हेतु सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था होना अति आवश्यक है।''

अध्ययन का उद्देश्य –

- महिला शिक्षिकाओं के परिवार में और कार्य स्थल में भावनात्मक हिंसा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कार्य स्थल में उच्च एवं औसत भावनात्मक हिंसा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- कार्यस्थल में उच्च एवं निम्न भावनात्मक हिंसा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना–

- महिला शिक्षिकाओं के परिवार में और कार्य स्थल में भावनात्मक हिंसा में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
- कार्य स्थल में उच्च एवं औसत भावनात्मक हिंसा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।
- कार्यस्थल में उच्च एवं निम्न भावनात्मक हिंसा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

जनसंख्या एवं न्यादर्श–

प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ राज्य के कोरिया जिले में स्थित नौकरी पेशा 640 शिक्षिकाओं का चयन किया गया है इन 640 शिक्षिकाओं में 320 ग्रामीण तथा 320 शहरी शिक्षिकाएँ शामिल है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोध में आँकड़ो के संकलन हेतु निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है।

(1) Emotional Violence Scale (Against Women) devoloped by S.K. Bawa and S. Kaur.

(2) Women social freedom scale developed by L.I. Bhushan.

अध्ययन में प्रयुक्त साँख्यिकीय विधियाँ–

(1) मध्यमान
(2) प्रमाणिक विचलन
(3) प्रमाणिक त्रुटि विचलन
(4) t- मूल्य परीक्षण।
(5) सार्थक अंतर मूल्य परीक्षण
(6) स्वतंत्र कोटि

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या –

H01:महिला शिक्षिकाओं के परिवार में और कार्यस्थल में भावनात्मक हिन्सा में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा।

Table – 1

महिला शिक्षिकाओं के परिवार में और कार्य स्थल में भावनात्मक हिंसा

Variable	Category	N	Mean	SD	SED	t-test value	Df	Significance Level	Interpretation
Emotional Violence	Emotional Violence At work Place	640	60.08	19.28	1.04	2.36	1278	0.05 = 1.96	H0 = 01 Accepted
	Emotional Violence In family	640	62.54	18.09				= 2.58	

व्याख्या –

सारणी क्रमांक– 1 से ज्ञात होता है कि परिवार में और कार्यस्थल में भावनात्मक हिन्सा का शिकार महिला शिक्षिकाओं के भावनात्मक हिन्सा के आधार पर प्राप्त किए गए मध्यमान क्रमशः 60.08 तथा 62.54 है। वही प्रमाणिक विचलन क्रमशः 19.28 तथा 18.09 मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जाँचने के लिए t – मूल्य परीक्षण किया गया। गणना से प्राप्त t का मान 2.36 है। $df = 1278$ के लिए t का सारणी मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.96 एवं 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.58 है। t का प्राप्त मान t के सारणी मान से 0.05 सार्थकता स्तर पर अधिक तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर कम है।

अतः हमारी परिकल्पना क्रमांक– 01 महिला शिक्षिकाओं के परिवार में और कार्यस्थल में भावनात्मक हिन्सा में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष–

अतः यह कह सकते है कि महिला शिक्षिकाओं के परिवार में और कार्यस्थल में भावनात्मक हिंसा में सार्थक अन्तर नहीं है।

H02 – कार्यस्थल में उच्च एवं औसत भावनात्मक हिन्सा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

LBP PUBLICATION

Table – 1

Variable	Category	N	Mean	SD	SED	t-test value	Df	Significance Level	Interpretation
Equality of Woman Attitude	High	146	51.8	10.01	1	5.45	532	0.05 = 1.96	H0 – 02 Rejected
	Average	388	57.25	11.31				0.01 = 2.59	

व्याख्या –

सारणी क्रमांक– 2 से ज्ञात होता है कि कार्यस्थल में उच्च और औसत भावनात्मक हिंसा का शिकार महिला शिक्षिकाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता के आधार पर प्राप्त किए गए मध्यमान क्रमशः 51.8 तथा 57.25 है, वहीं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 10.01 तथा 11.31 है। मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जाँचने के लिए t – मूल्य परीक्षण किया गया। गणना से प्राप्त t का मान 5.45 है। df = 532 के लिए t का सारणी मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.96 एवं 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.59 है t का प्राप्त मान t के सारणी मान से 0.05 तथा 0.01 दोनों ही सार्थकता स्तरों पर अधिक है।

अतः हमारी परिकल्पना क्रमांक–2 कार्यस्थल में उच्च एवं औसत भावनात्मक हिंसा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा, अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष–

अतः हम यह कह सकते है कि कार्यस्थल में उच्च एवं औसत भावनात्मक हिंसा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अंतर है।

H03 - कार्यस्थल में उच्च एवं निम्न भावनात्मक हिंसा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

Table – 3

Variable	Category	N	Mean	SD	SED	t-test value	Df	Significance Level	Interpretation
Equality of woman attitude	High	146	51.8	10.01	1.19	10.07	250	0.05=1.97	H0 – 03 Rejected
	Low	106	64.54	8.94				0.01 = 2.59	

व्याख्या –

सारणी क्रमांक–3 से ज्ञात होता है कि कार्यस्थल में उच्च और निम्न भावनात्मक हिंसा का शिकार महिला शिक्षिकाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता के आधार पर प्राप्त किए गए मध्यमान क्रमशः 51.8 तथा 64.54 है, वहीं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 10.01 तथा 8.94 है। मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जाँचने के लिए t – मूल्य परीक्षण किया गया। गणना से प्राप्त t का मान 10.07 है। df = 250के लिए t का सारणी मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 एवं 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.59 है। t का प्राप्त मान t के सारणी मान से 0.05 तथा 0.01 दोनो ही सार्थकता स्तरों पर अधिक है।

अतः हमारी परिकल्पना क्रमांक– 3 कार्यस्थल में उच्च एवं निम्न भावनात्मक हिंसा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष–

अतः यह कह सकते हैं कि कार्यस्थल में उच्च एवं निम्न भावनात्मक हिंसा के शिकार महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अन्तर है।

उपसंहार–

महिलाएँ हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा है। इसीलिए राष्ट्र के विकास के इस महान कार्य में महिलाओं की भूमिका तथा योगदान को पूरी तरह और सही परिप्रेक्ष्य में रखकर ही राष्ट्र निर्माण के कार्य को समझा जा सकता है। प्रस्तुत शोध के परिणाम से यह स्पष्ट है कि महिला शिक्षिकाओं के भावनात्मक हिंसा का उनके सामाजिक स्वतन्त्रता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः यह आवश्यक है कि महिलाओं को घर तथा कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण दिया जाए, जिससे वह स्वस्थ तथा संयमित जीवन की ओर अग्रसित होकर एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

- पाण्डेय, आर.एस. (2003), शिक्षा मनोविज्ञान लाल बुक डिपो, मेरठ, Page No. - 340
- नायक, पी.के. एवं दुबे, पी. 2016 रिसर्च मेथेडोलॉजी– ए.पी.एच. पब्लिशींग कॉरपोरेशन, अन्सारी रोड दरियागंज नई दिल्ली।
- नायक, पी. के. 2018, शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।
- सिंह, ए.के (2015) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोती लाल बनारसी दास, पटना। Page No. – 101, 217
- शर्मा, वी.पी. (2015) रिसर्च मेथोडोलॉजी पंचशील प्रकाशन : जयपुर, Page No. – 245
- यादव, बी.आर (2003), शिक्षा दर्शन, Page No. - 231
- गुप्ता, अल्का (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, Page No.- 218
- मुखर्जी रवीन्द्रनाथ (2004), भारतीय समाज व संस्कृति, Page No. – 105, 201
- कुमार, राकेश (2003), लाल बुक डिपो, मेरठ, Page No. – 186
- गोपाल, नसरला, (2008), नारी–सशक्तिकरण में सरकार की भूमिका Page No. – 86, 201

LBP PUBLICATION